TOI

'Listening with empathy key to patient trust'

TIMES NEWS NETWORK

Lucknow: An orientation programme on work ethics, that brought together over 100 frontline staff—including receptionists, junior reception officers, public relations officials, medical social workers, and nursing staff—was held at SGPGIMS on Saturday.

Addressing the gathering, Prof Mukul Srivastava from the mass communication and journalism department at Lucknow University, said: "Discipline, time management and behavioural refinement are key to improving institutional outcomes and public trust. A satisfied patient is worth a thousand advertisements. A patient's dignity must remain paramount." He added that staff members who serve as the first point of contact for patients often act as "shock absorbers" and should therefore learn to listen with empathy.

CMS Prof Devendra Gupta stressed that effective communication was central to hospital functioning.

Medical superintendent Prof R Harshvardhan highlighted the importance of non-verbal cues in patient interaction. "Words are only a medium. How we communicate matters more," he said.

HINDUSTAN

काम की खबरें

1

छात्रवृत्ति के लिए कल तक आवेदन कर सकेंगे

एलयू में छात्र कल्याण, कर्मयोगी और शोध मेधा छात्रवृत्तियों के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि बढ़ा दी गई है। 2025-26 के लिए छात्रवृत्तियों के आवेदन की अंतिम तिथि को बढ़ाकर एक दिसम्बर कर दिया गया है।

VOICE OF LUCKNOW 6

शोधार्थियों ने विलुप्त होती बोलियों पर प्रकट किये विचार

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग में डॉ. पीतांबर दत्त बड़थ्वाल व्याख्यानमाला आयोजित की गई। इस व्याख्यानमाला में पीएचडी शोधार्थियों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए जाते हैं।इस कड़ी में विभाग के दो शोधार्थियों लक्ष्मी देवी (चतुर्थ वर्ष) और उत्तम कुमार (प्रथम वर्ष) द्वारा क्रमशः 'साहित्येतिहास लेखन में डॉ. सुमन राजे की भूमिका' तथा 'विलुप्त हो रही भारतीय बोलियों के पुनर्जीवन में एआई की भूमिका' विषयों पर शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। लक्ष्मी देवी ने अपने शोध पत्र में डॉ. सुमन राजे के साहित्येतिहास ग्रंथों के मूल प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालते हुए उनकी इतिहास दृष्टि पर विचार प्रस्तुत किया। वहीं, उत्तम कुमार ने अपने शोध पत्र में विलुप्त हो रही भारतीय बोलियों का ज़िक्र करते हुए इस बात पर प्रकाश डाला कि किस तरह कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के माध्यम से उनके संरक्षण, संवर्द्धन और प्रसार की दिशा में कदम उठाए जा सकते हैं। इस आयोजन के दौरान विभागाध्यक्ष प्रो. पवन अग्रवाल, व्याख्यानमाला की संयोजक प्रो. हेमांशु सेन तथा डॉ. ए. सेंथिल कुमार के साथ अन्य विभागीय विद्वान एवं छात्र उपस्थित रहे।